हम सूरज को देख सकते हैं

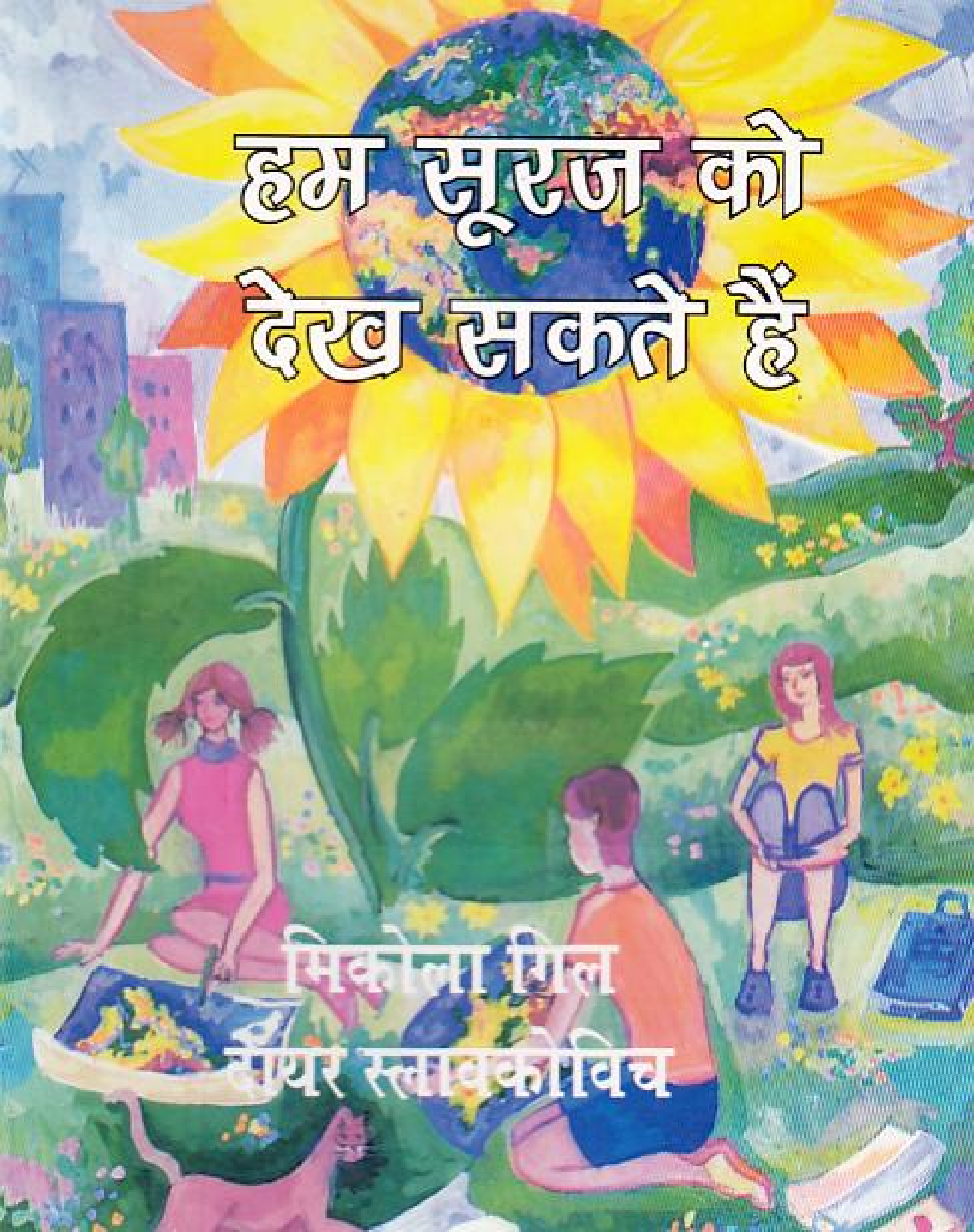

मिकोला गिल
प्यटर स्लावकोविच

हम सूरज को देख सकते हैं

मिकोला गिल

दायर स्लावकोविच

हिन्दी रूपान्तर : कविता

आवरण एवं रेखांकन : रामबाबू

अनुराग ट्रस्ट

सर्वाधिकार सुरक्षित

मूल्य : रु. 20.00

प्रथम संस्करण : जनवरी 2008

पुनर्मुद्रण : जनवरी 2010

पहला हिन्दी संस्करण : जनवरी, 2008

प्रकाशक

अनुराग ट्रस्ट

डी - 68, निरालानगर

लखनऊ - 226020

लेज़र टाइप सेटिंग : कम्प्यूटर प्रभाग, राहुल फ़ाउण्डेशन

मुद्रक : क्रिएटिव प्रिण्टर्स, 628/एस-28, शक्तिनगर, लखनऊ

हम सूरज को देख सकते हैं

मिकोला गिल

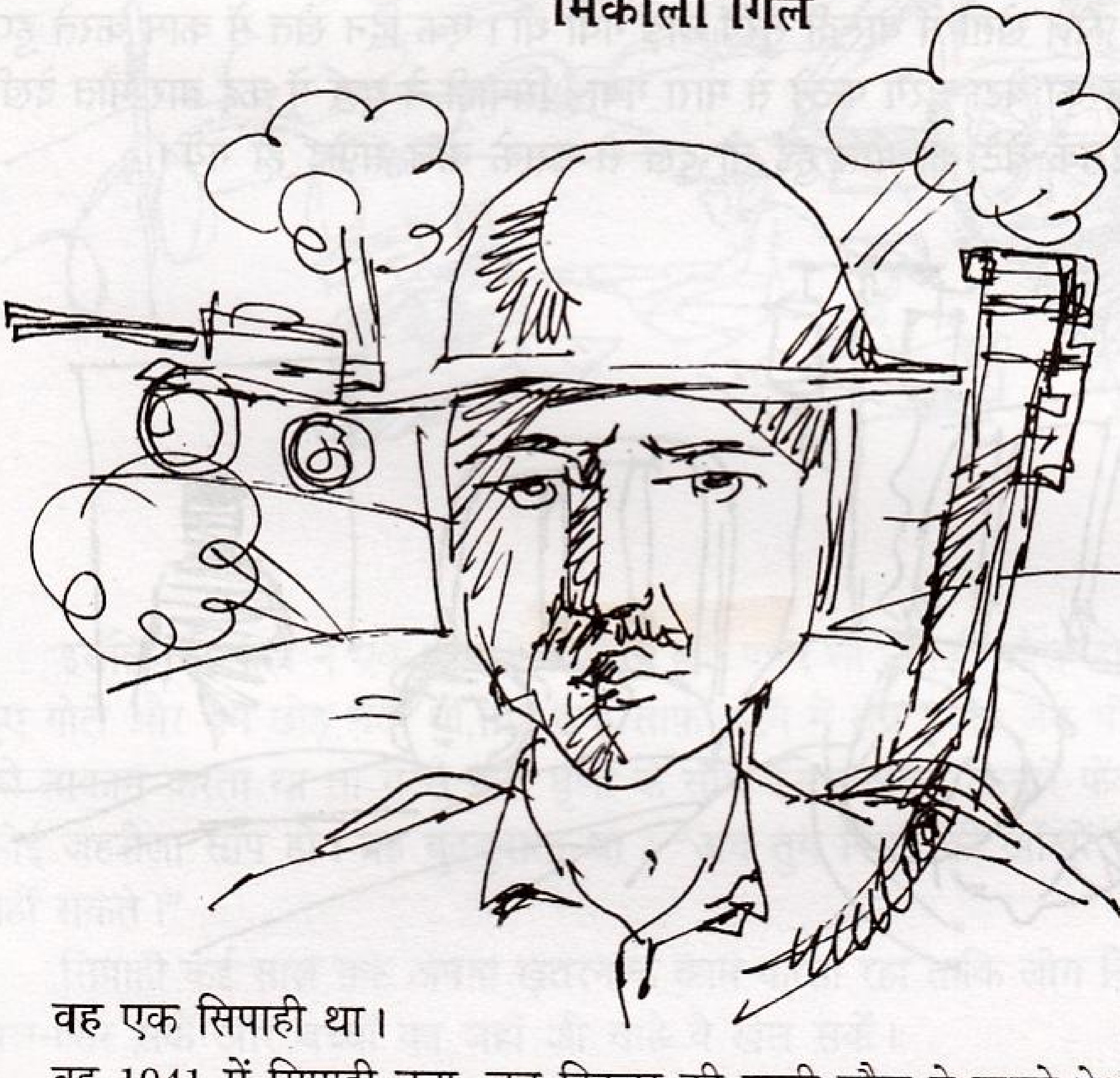

वह एक सिपाही था।

वह 1941 में सिपाही बना, जब हिटलर की नाज़ी फ़ौज ने उसके देश पर हमला कर दिया।

वह कोई साधारण सिपाही नहीं था। वह एक इंजीनियर था। फ़ौज ने इंजीनियर का काम ख़तरनाक और कठिन होता है। उसे हमेशा आगे रहना पड़ता है। जब टैंक आगे बढ़ते

हैं तो उससे पहले इंजीनियर को जाकर बारूदी सुरंगें हटानी पड़ती हैं।

इंजीनियर को बहादुर होना चाहिए। उसका कलेजा बहुत मज़बूत और हाथ बहुत सधे होने चाहिए। अगर हाथ काँपे तो बारूदी सुरंग उसके हाथों में ही फट जाएगी।

हमारा सिपाही बहादुर था। उसका कलेजा मज़बूत था और हाथ सधे हुए थे। उसने कभी गलतियाँ नहीं कीं। उसने सैकड़ों, या शायद हज़ारों सुरंगें हटाईं और जीत का रास्ता साफ़ किया। ये बहुत लम्बा रास्ता था। चार साल बाद 1945 में लड़ाई ख़त्म हुई।

सिपाही ने सोचा कि अब फ़ौज में उसका काम ख़त्म हो गया। वह घर आया। उसे उम्मीद थी कि अब वह हल चलायेगा और फसल उगायेगा। लेकिन तभी एक हादसा हो गया। दुश्मन की फ़ौज खेतों में बारूदी सुरंगें छोड़ गयी थी। एक दिन खेत में काम करते हुए उसका किशोर उम्र का बेटा सुरंग फटने से मारा गया। सिपाही ने युद्ध में कई बार मौत देखी थी लेकिन जब उसके बेटे की मौत हुई तो दुख से उसके बाल सफ़ेद हो गये।

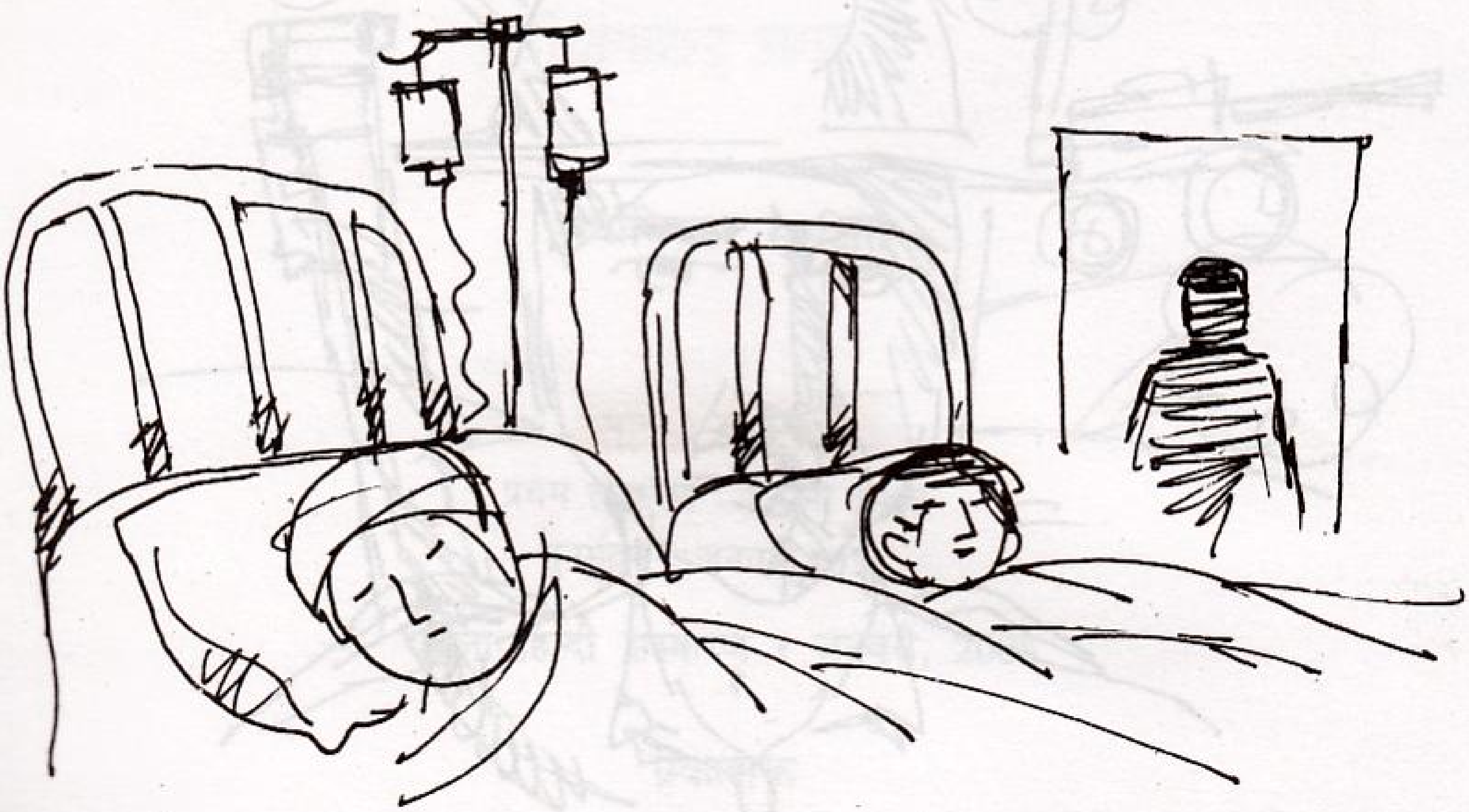

एक बार उसने सुना कि अस्पताल में एक अलग वार्ड है जहाँ बारूदी सुरंगों से घायल हुए बच्चे भरती हैं। वह उनसे मिलने गया। उन्हें देखकर उसका दिल रो उठा जैसे अपने बेटे की मौत के समय हुआ था। एक बच्चा उसे हमेशा याद रह गया। उसकी आँखों की जगह

सिर्फ़ गड्ढे रह गये थे। उस बच्चे के शब्द उसके कानों में गूँजते रहे : "मैं सूरज को नहीं देख सकता..."

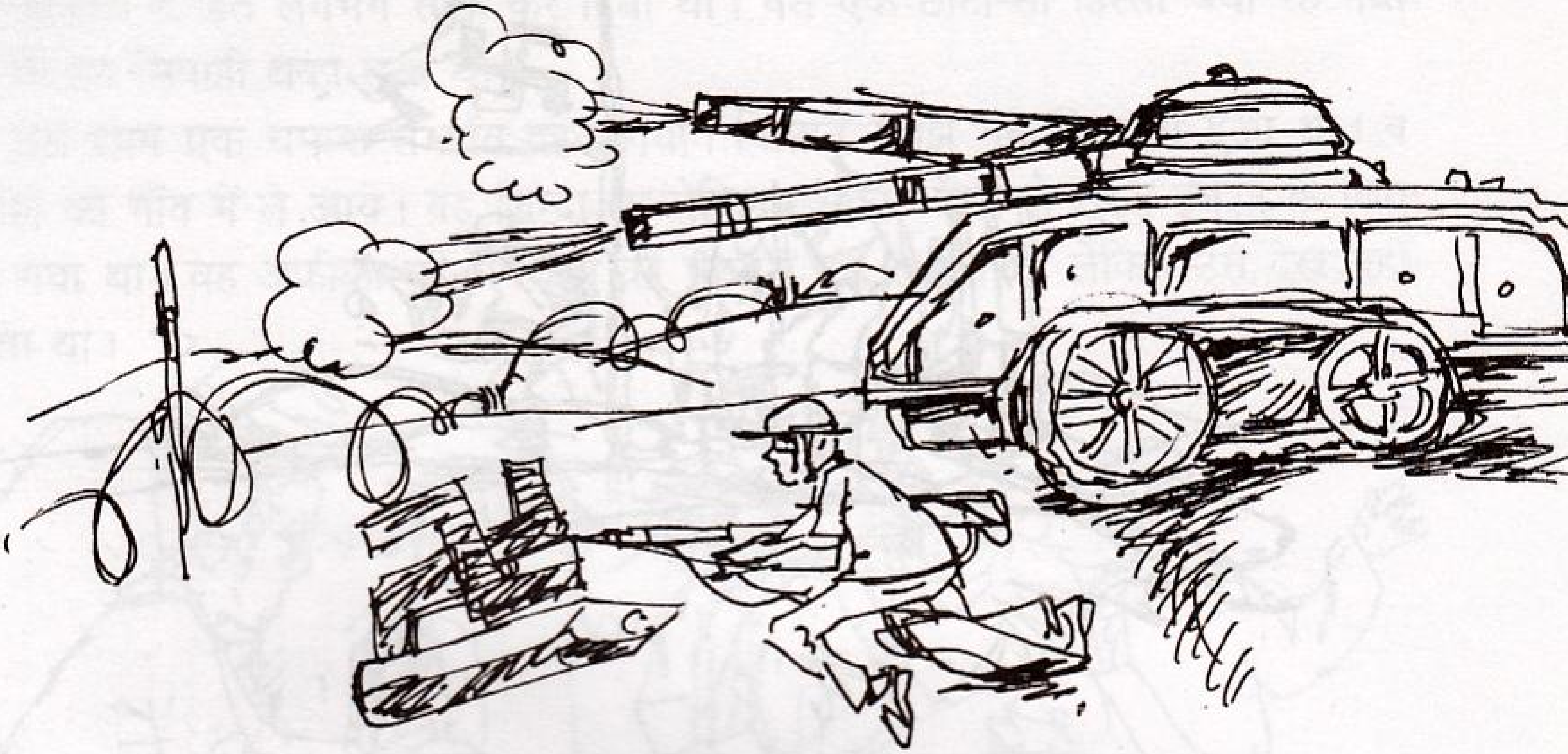

इसलिए सिपाही ने एक बार फिर फ़ौजी वर्दी पहन ली। नाज़ी फ़ौज जो सुरंगें, बिना फटे हुए गोले और बम छोड़ गयी थी, वह उन्हें साफ़ करने में लग गया। जब भी वह किसी सुरंग को नाकाम करता था तो गुस्से और घृणा के साथ उसे उठाकर किनारे फेंकता था जैसे वह कोई जहरीला साँप हो। वह बुदबुदाता था : "अब तुम किसी की आँखों से सूरज को छीन नहीं सकते।"

सिपाही कई साल तक अपना ख़तरनाक काम करता रहा ताकि लोग बिना डरे हर जगह चल-फिर सकें और बच्चों का जहाँ जी चाहे वे खेल सकें।

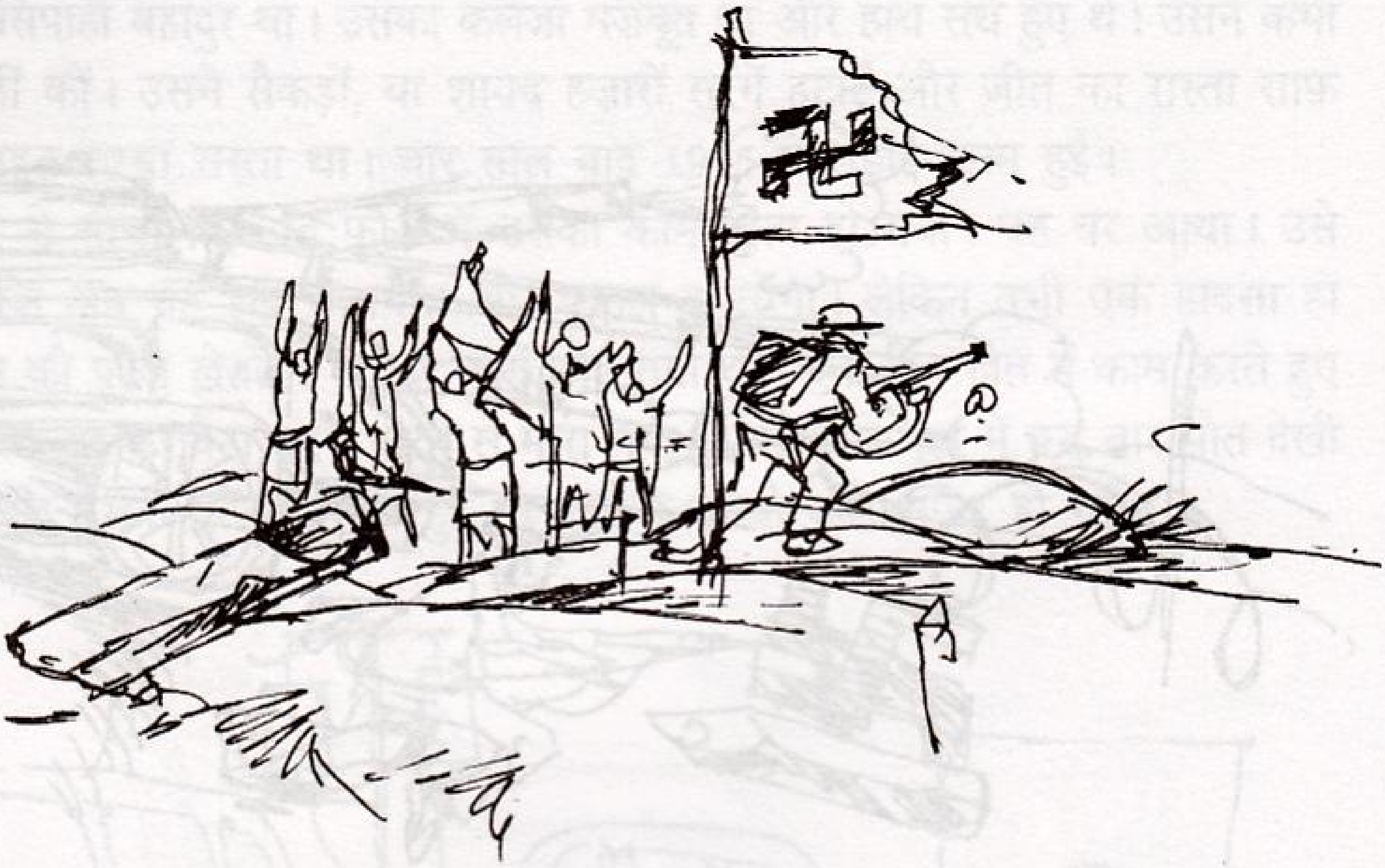

दूसरे देशों में भी लड़ाइयाँ जारी थीं। अफ्रीका के कई देशों में जनता अपनी आज़ादी के लिए लड़ रही थी। वहाँ भी जनता के दुश्मनों ने बारूदी सुरंगें, बम और गोलों से धरती को पाट दिया था। वहाँ भी अस्पतालों में घायल बच्चों से भरे हुए वार्ड थे।

आज़ादी के बाद एक देश की सरकार के अनुरोध पर सोवियत संघ के उस सिपाही को बारूदी सुरंगें हटाने के लिए वहाँ भेजा गया।

उसने फिर कोई ग़लती नहीं की। उसके हाथ कभी नहीं काँपे। उसने हज़ारों सुरंगों और बमों को नाकाम किया। उस सुदूर अफ्रीकी देश में भी जहरीले साँप के दाँत तोड़कर फेंकते हुए वह कहता था : "अब तुम कभी किसी की आँखों से सूरज को नहीं छीन पाओगे।"

उसे एक छोटा-सा गाँव ज़िन्दगी भर याद रहा। सारे गाँव वालों ने सिपाही का स्वागत किया। वह जानते थे कि मज़दूरों के राज से आया यह सिपाही सच्चे दिल से उनकी मदद करेगा। उसे एक छोटी बच्ची याद थी जिसने उसे जंगली फूलों का गुलदस्ता भेंट किया था।

बच्ची का रंग बिल्कुल साँवला था और उसकी मुस्कान ने उसका गोल चेहरा चमक उठता था। सिपाही को उस गाँव में एक ऐसे खेत से सुरंगें हटानी थीं जिसमें ऊँची घास उगी हुई थी। किसानों ने खेत में हल चलाने की कोशिश की लेकिन उनमें से कई तो लौटकर ही नहीं आये।

सिपाही ने खेत लगभग साफ़ कर दिया था। बस एक छोटा-सा हिस्सा बचा रह गया था। लेकिन सिपाही थका हुआ था।

उस शाम एक धमाके से गाँव दहल गया। किसान समझ गये कि क्या हुआ था। वे सिपाही को गाँव में ले आये। वह ज़िन्दा था लेकिन उसकी आँखों से सूरज हमेशा के लिए छिन गया था। वह अफ्रीका की गर्म धूप को महसूस कर सकता था लेकिन उसे देख नहीं सकता था।

हज़ारों लोग उसे विदाई देने आये। साँवली लड़की ने उसे फिर फूलों का गुलदस्ता दिया और हालाँकि वह उसे देख नहीं सकता था, पर वह उसे पहचान गया। उसके मज़बूत हाथ ने बच्ची के रूखे बालों को प्यार से सहयाला। शायद पहली बार उसका हाथ काँप गया।

घर पहुँचने पर उसे पता चला कि वह नाना बन गया है। उसकी बेटी ने एक प्यारी-सी बच्ची को जन्म दिया था। वह बहुत गोरी थी और उसकी आँखें नीली थीं। लेकिन सिपाही के घर वालों को यह देखकर हैरानी होती थी कि वह हमेशा बच्ची को "साँवली" कहकर बुलाता था। शायद इसलिए कि उसने जिस बच्ची को आखिरी बार देखा था वह खिली हुई मुस्कान वाली साँवली लड़की ही थी।

हम सब सूरज को देख सकते हैं। तुम उसे देख सकते हो, मैं भी देख सकता हूँ। लेकिन सफ़ेद बालों वाला एक लम्बा आदमी छड़ी टेकते हुए सड़क पर जा रहा है। सूरज उसके चेहरे पर चमकता है लेकिन वह सूरज को देख नहीं सकता। हमें प्यार और सम्मान से उसे सलाम करना चाहिए।

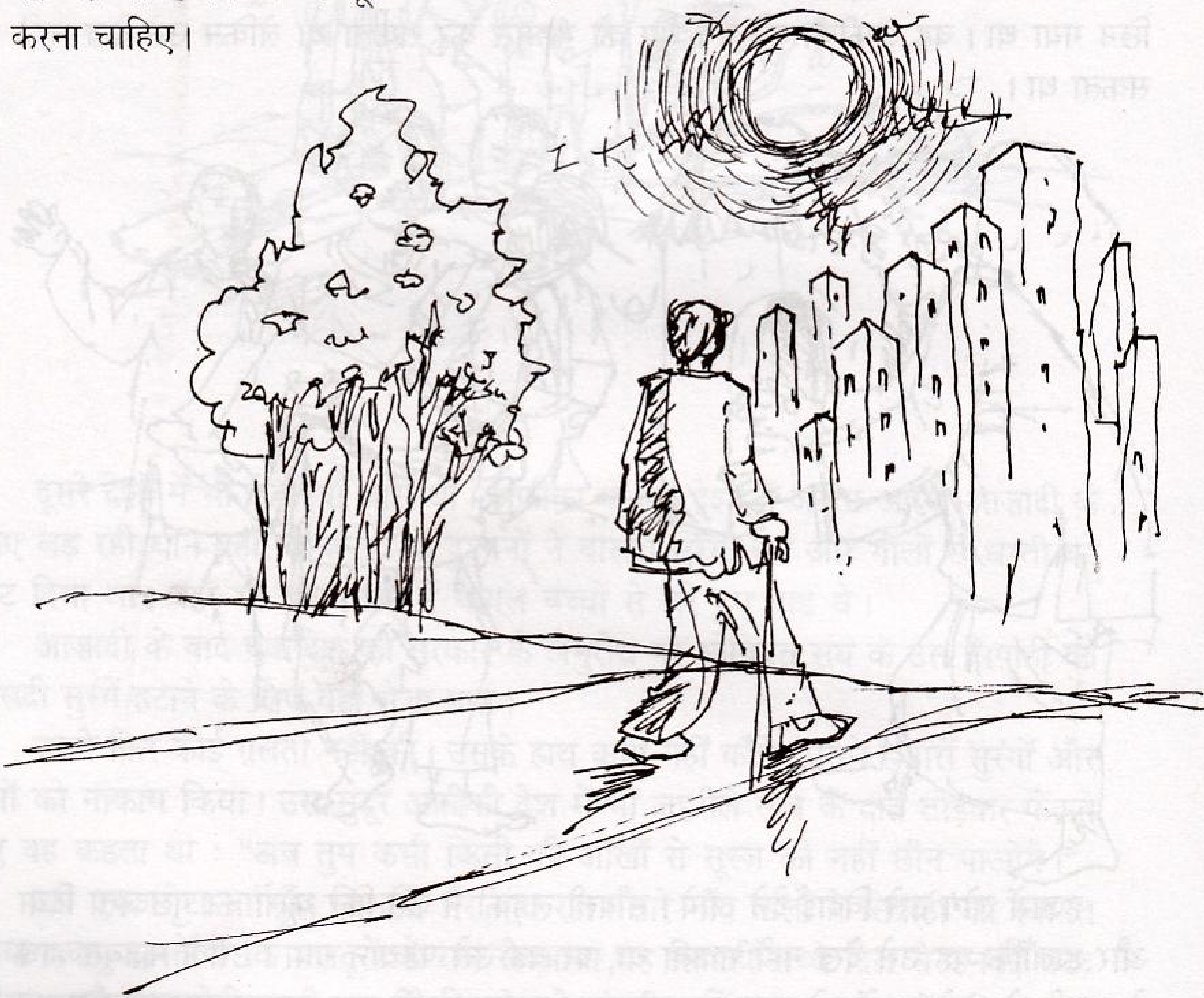

डाक के डिब्बे में फूल

दायर स्लावकोविच

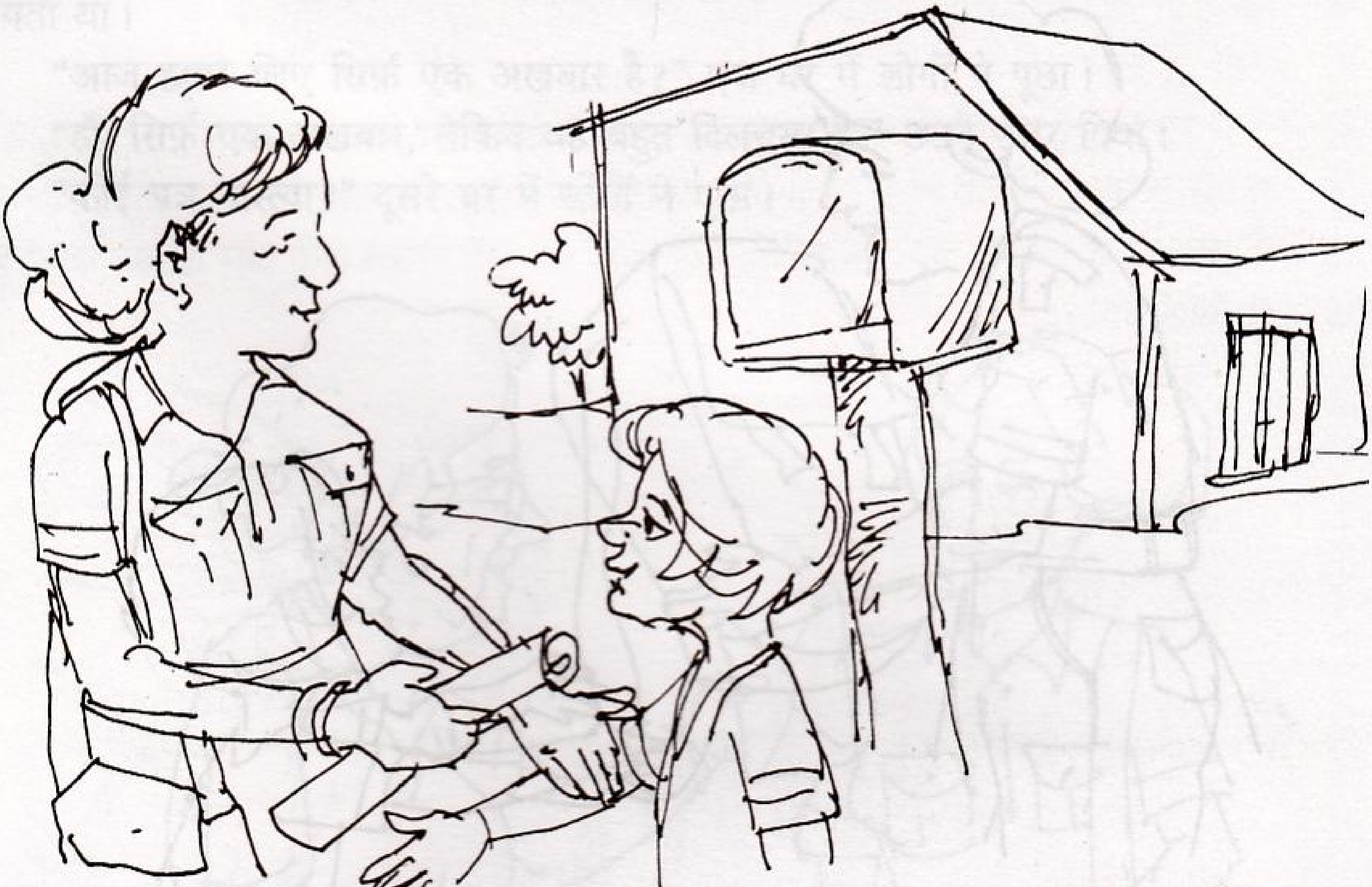

नास्त्या महिला डाकिया से गेट पर ही मिल गयी और उससे अखबार ले लिया। महिला डाकिया अपनी भौहों का पसीना पोंछ रही थी। "आण्टी मरीना, क्या तुम्हें ऐसे भारी थैले को लेकर कठिनाई नहीं होती है?"

"और क्या! ज़रा खुद उठाकर देखो।"

"तुम्हारे पास इतने सारे अखबार क्यों है?"

"क्योंकि लोग बहुत से अखबार मँगाते हैं। वे बहुत से अखबार पढ़ते हैं जिससे कि उन्हें और जानकारी मिले।"

"क्या मैं तुम्हारी मदद कर सकती हूँ?"

"तुम मेरी मदद कैसे कर सकती हो, प्यारी लड़की? यह थैला तुम्हारे कन्धों के लिये बहुत भारी है।"

"मैं तुम्हारे साथ सड़क पर चलूँगी। एक घर में अखबार तुम ले जाना, मैं दूसरा अखबार दूसरे घर में ले जाऊँगी। हम काम जल्दी पूरा कर लेंगे, और तब तुम्हारे लिये आसानी हो जायेगी।"

"तुम्हें इतनी तकलीफ करने की क्या जरूरत है, तुम्हारे पैर थक जाएँगे।"

"ये तो कुछ भी नहीं है।"

इस तरह वे साथ-साथ चल दिये। आण्टी मरीना एक घर में गयीं, नास्त्या दूसरे में।

उन्होंने आधे घण्टे में शहर का चक्कर पूरा कर लिया। यह तरीका तेज और कारगर था। बस एक समस्या थी : तीन घरों में पत्र पेटिकाएँ इतनी ऊचाई पर थीं कि तास्त्या उन तक पहुँच ही नहीं सकती थी।

"तुमने मेरी बहुत बड़ी मदद की है," अलग होते समय आण्टी मरीना ने कहा। "धन्यवाद मेरी सहायक।"

तब से नास्त्या हर दिन शहर के दूसरे छोर तक जाने लगी। वह पुल पर आण्टी मरीना से मिलती थी और फिर दोनों अपने-अपने हिस्से की डाक लेकर चल देती थीं।

लोगों ने नास्त्या को डाकिया लड़की कहना शुरू कर दिया था। यह उसे बहुत अच्छा लगता था।

"आज हमारे लिए सिर्फ़ एक अखबार है?" एक घर में लोगों ने पूछा।

"हाँ, सिर्फ़ एक अखबार, लेकिन यह बहुत दिलचस्प है," उसने उत्तर दिया।

"कोई पत्र नास्त्या?" दूसरे घर में लोगों ने पूछा।

"लोग अभी पत्र लिख ही रहे है," नास्त्या ने आण्टी मरीना की तरह मज़ाक किया।

बूढ़ी शिक्षिका उसका बहुत गर्मजोशी से स्वागत करती थी। डाकिया लड़की को उसके

घर जाना अच्छा लगता था। लेकिन, सोमवार को उसके पास बूढ़ी औरत को देने के लिए कुछ भी नहीं था।

"आण्टी मरीना आज हम शिक्षिका के लिए कुछ भी क्यों नहीं ले जा रहे हैं?"

"उनका अखबार सोमवार को नहीं आता है। और उनके लिए कोई पत्र और पत्रिका भी नहीं है।"

नास्त्या को बूढ़ी महिला के लिए दुख हुआ : "शायद वह अकेली बैठी सोच रही होगी : डाकिया लड़की आज नहीं आयी। जरूर आलसी हो गयी है, शायद..." इस अप्रत्याशित विचार से वह चौंक पड़ी।

जब वह आण्टी मरीना के साथ डाक बाँटना खत्म करक वापस जाने लगी, तो नास्त्या शहर के बाहर दौड़ती हुई एक मैदान में गयी जहाँ सनई के फूल खिले हुए थे और गेहूँ की फसल उगी हुई थी।

उसने खूब सारे ताजे फूल चुने। उस दिन शिक्षिका को अपनी डाक पेटिका में फूलों का गुलदस्ता मिला। शिक्षिका ने फूलों को सावधानी से पेटिका से बाहर निकाला और अपने चेहरे के पास लायी। उसके चेहरे की झुर्रियाँ छिप गयीं, वह युवा दिखने लगी और उसका चेहरा खुशी से खिल उठा।

अनुराग ट्रस्ट
लखनऊ